International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

सन्त सुरदास का काव्य और भक्ति आन्दोलन

धर्मबीर
पीएच.डी. (हिन्दी)
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
पंजीकरण संख्या : 05–BB–544
Email : dslangyan@gmail.com
फोन नं0 : 9050235589

भक्ति साहित्य में अप्रतिम स्थान प्राप्त एवं कृष्ण के अनन्य उपासक, हिन्दी साहित्य के महान कवियों में कवि सूरदास का महत्वपूर्ण स्थान है। भक्तिकाल में सगुण भक्तिधारा में कृष्ण भक्तिशाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि सूरदास अपनी रचनाओं के लिए सर्वविदित है।

सूरदास के जीवन वृत्त से संबंधित अन्तः साक्ष्य के रूप में बहुत कम प्रमाणिक सामग्री उपलब्ध है। चौरासी वैष्णवन की वार्ता, हरिरायजी कृत 'भाव प्रकाश', वल्लभ सम्प्रदाय के अन्य कतिपय ग्रन्थों में प्राप्त सामग्री के आधार पर सूरदास के जीवन पर थोड़ा प्रकाश पड़ता है। गोकुलनाथ कृत 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' में सूरदास के जीवन से संबंधित अनेक घटनाओं का विवरण तो प्राप्त होता है किन्तु सन्–संवतों का केवल उल्लेख किया गया है। यही कारण है कि सूर के जन्म स्थान, निधन, सम्प्रदाय आदिको लेकर विद्वानों में एकमत नहीं है।

पुष्टिमार्गीय मान्यताओं के अनुसार आचार्य बल्लभ का जन्म वैशाख कृष्ण एकादशी रविवार सवत् 1535 में हुआ था और मृत्यू आषाढ़ शुक्ल 3 सम्वत् 1587 में हुई थी। आचार्य जी ने गौ–घाट पर सूर को अपना शिष्य बनाया था। इसी सम्प्रदाय की अन्य मान्यताओं के अनुसार सूरदास बल्लभाचार्य से अवस्था में 10 दिन छोटे थे और विट्ठलनाथ जी सूर की मृत्यु के समय जीवित थे। विट्ठलनाथ जी का गोलोकवास सं. 1942 में हुआ। अतः सूर का समय अधिक से अधिक सं. 1535 से सं. 1642 तक माना जा सकता है।[1] श्री हरिराय जी कृत भावप्रकाशवली 84 वैष्णवन की वार्ता के अनुसार सूरदास का जन्म दिल्ली से चार कोस ब्रज की ओर स्थित सीही नाम ग्राम में हुआ था।[2] इस प्रकार पर्याप्त अनुसंधान के आधार पर यह

सिद्ध है कि सूरदास का जन्म वैशाख शुक्ल 5 मंगलवार सं. 1535 में सीही नामक स्थान में हुआ।[3] सूरदास ने सवा लाख पदों की रचना की थी। 'चौरासी वैष्णव की वार्ता' में सूर के 'सहस्त्रावधि' पद करने का उल्लेख है।''[4] इसके तीन ग्रंथों में भी 'सूरदास और 'सूरसारावली' उनकी स्वतंत्र रचनाएँ है जबकि 'साहित्य लहरी' एक संग्रह ग्रंथ है। साधारणतया भक्तिकालीन कवि भाव पक्ष के एक रीतिकालीन कला पक्ष के कवि कहे जाते हैं। सूरदास यद्यपि भाव पक्ष के कवि हैं तथापि उनकी भावरूपी भागीरथी में कलारूपी कालिंदी भी आ मिली है। इस संगम के फलस्वरूप उनका काव्य अतीव आनन्ददायक हो गया है। यहां संक्षेप में सूर की महत्वपूर्ण रचनाओं पर दृष्टिपात कर रहे हैं–

सूरसागर :–

महात्मा सूरदास की सर्वश्रेष्ठ रचना 'सूरसागर' है। इसी एक रचना के कारण सूरदास हिन्दी साहित्य में बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त कर चुके हैं। यद्यपि सूरदास ने श्रीमदभागवत् को आधार बनाकर यह ग्रंथ लिखा है तथापि यह श्रीमद्भागवत का अनुवाद नहीं है। ''राजकुमार वर्मा के अनुसार सूरसागर में भागवत के समान बारह स्कन्ध अवश्य हैं, किन्तु उन स्कन्धों का विस्तार सूरदास ने अपनी काव्य दृष्टि के अनुसार ही किया है।''[5] इसमें सूरदास ने दशम स्कंध को ही ज्यादा महत्व दिया है। सूरसागर में कृष्ण जन्म से लेकर मथुरा जाने तक की कथा वर्णित है।

सूरसारावली :–

''सूरसारावली में समग्र सृष्टि की रचना होली की लीला के रूपक द्वारा वर्णित की गई है। अर्थात् इस ग्रंथ का मूल विषय आध्यात्मिक होली के खेल पर आधारित है।'' क्रिया करते–करते भगवान की सृष्टि की रचना का विचार हुआ। इस विचार से काल पुरूष का अवतार हुआ। प्रकृति के सत्व, रजस और तमस तीन गुण उत्पन्न हुए। उनसे अठाईस तत्वों की उत्पत्ति हुई फिर कमल से ब्रह्म का जन्म हुआ। हरि ने ब्रह्म की सृष्टि की रचना की आज्ञा दी। ब्रह्म ने होली के खेल के रूप में ही लोकों की रचना कर डाली। इसके आगे ब्रह्म के युगों का वर्णन है। फिर वराह–अवतार तथा कपिल मुनि का उल्लेख है। उसके आगे चौबीस

अवतारों का वर्णन आता है। जिसके बीच में ध्रुव–प्रहलाद आदि की कथा भी है। छनद संख्या तीन सौ साठ से कृष्णावतार की कथा आरम्भ होती है। कृष्ण दृष्टिकूट पदों की सूची भी है। ग्रंथ के अन्त में होली और बसन्त के उत्सवों का वर्णन है।''[6]

''इस ग्रंथ में समस्त तत्व, ब्रह्मण, देव, माया, काल, प्रकृति, पुरूष, श्रीपति और नारायण उसी का एक गोपाल भगवान के अंश रूप है, जिसकी कथा भगवान की शाश्वतलीला है और जिसका समक्ष ज्ञान, कर्म, उपासना और योग सब भ्रम रूप है। यही सूरसारावली का सार तत्व है।''[7]

साहित्य लहरी :–

सूरदास का तीसरा प्रमुख ग्रंथ 'साहित्य लहरी' बताया जाता है। इसका विषय 'सूरसागर' से कुछ भिन्न दिखाई देता है। इसके विषय में भी कोई तारतम्य दृष्टिगत नहीं होतां इसमें कृष्ण की बाललीला से संबंधित पद भी है और नायिका भेद के रूप में राधा के मान आदि का वर्णन भी प्राप्त होता है। इसमें संयोगिनी विलासवती स्त्री का भी वर्णन है और वियोगिनी प्रोषित पतिका का भी। इसमें स्वकीया, परकीया, मुग्धा, प्रौढ़ा, धीर, ज्येष्ठा, विदग्धा आदि सभी प्रकार की नायिकाओं का वर्णन प्राप्त होता है। यह ग्रंथ लक्षण ग्रंथों की कोटी में आता है। इसकी रचना दृष्टिकूट पदों के रूप में हुई है। इसमें प्रधान रूप से तो अलंकारों का वर्णन है किन्तु रस और नायिकाभेद भी है।

'साहित्य लहरी' एक स्वतंत्र रचना है अथवा सूरसागर में आये हुए दृष्टिकूट पदों का संकलन मात्रसूरसागर का अध्ययन करने से प्रतीत होता है कि साहित्य लहरी के केवल कुछ पद ही सूरसागर में मिलते है। अधिकांश पद स्वतंत्र है। सूरदास के नाम से एक 'सूर शतक' नामक रचना भी देखने में आई है। उसमें प्रायः वे ही पद है जो साहित्य लहरी में हैं इस ग्रंथ में राधा–कृष्ण प्रेम–लीला, नायक–नायिका भेद तथा अलंकार, रस आदि को वर्णित किया गया है। सूरदास का हिन्दी साहित्य में जो कृष्णकाव्य समाहित है वह प्राणवंत, उल्लासमय, सत्य, सुंदर एवं मांगलिक भावों के प्रकाश पुंज से ओत–प्रोत है। ''हिन्दी साहित्य के भक्ति काल में

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

जो प्रेम भक्ति धारा प्रवाहित हुई। जिसमें निमज्जित होकर भारतीय जनता अपने क्लशकालुष्य से मुक्त हुई, वह भारतीय चिन्तन और भारतीय परम्परा की एक बहुत भारी उपलब्धि है।''[8]

ईश्वर में पराकोटि के अनुराग को भक्ति कहते हैं। वह प्रेम जो सांसारिक रूपों से भिन्न है तथा ईश्वरोन्मुख है, भक्ति के रूप में जाना जाता है। भक्ति परमप्रेम रूप वाली होती है। उसकी प्रकृति अमृत के समान होती है। जिस प्रकार अमृत हर समय, हर स्थिति में और हर व्यक्ति का कल्याण करता है, उसी प्रकार भक्ति भी सर्वथा कल्याणकारिणी ही होती है। भक्ति की प्राप्ति होने पर किसी भी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा नहीं होती। व्यक्ति उसे प्राप्त करके सन्तुष्ट हो जाता है, तृप्त हो जाता है, आप्तकार होकर आत्मकार हो जाता है, उस स्थिति में वह किसी से ईर्ष्या नहीं करता उसका चित्त शान्त हो जाता है।

सूरदास का अविर्भाव काल भारतीय संस्कृति का संक्रान्ति काल माना जाता है। इसे धर्मभावना और साधना के वैविध्य का काल भी कह सकते है। कुछ वैष्णव आचार्यों ने अपने संकल्पित विवेक के माध्यम से प्राचीन दर्शन की व्याख्या देने का प्रयास किया है। उन विद्वानों में मुख्यतः रामानुज, मध्वाचार्य, निर्वाकाचार्य, विष्णु स्वामी और वल्लभाचार्य के नाम आते है। इन आचार्यों ने शंकर के अद्वैतवाद का खण्डन करने के पश्चात् सही अर्थ में भक्ति के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ और भक्ति आन्दोलन ने गति पकड़ ली।

दूसरी ओर ऐसे भक्त थे जो भावप्रवन भक्तों के नाम से जाने जाते थे। अर्थात् इन भक्तों ने लोकभाषा को अपने काव्य का माध्यम बनाकर अपनी भक्तिभावना को अभिव्यक्ति दी थी। जिसके कारण भक्ति आन्दोलन का सामाजिक चेतना से सम्पर्क हुआ। इधर दक्षिण में रामानुज मध्वाचार्य, निर्वाकाचार्य और बल्लभाचार्य के दार्शनिक ज्ञान के साथ उनके मन में आलवारों की भक्तिभाव पूरित सरस पदावली का रस भी विद्यमान था। इसलिए यह कवि केवल आचार्य ही नहीं, बल्कि एक भावुक भी थे। ब्रज प्रदेश में कृष्ण भक्ति के प्रचार–प्रसार का सबसे महान कार्य बल्लभाचार्य और महाप्रभु ने किया था। इस समय उनके समकालीन भक्त सम्प्रदायों में हरिदासी सम्प्रदाय और राधावल्लभ सम्प्रदाय प्रमुख थे। इनसे सूरदास का

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

घनिष्ठ संबंध था। अर्थात् भक्तिआन्दोलन और भक्ति काव्य इन दो रूपों में लोक संस्कृति का उत्थान हुआ था।

भक्ति आन्दोलन पर पुराणों के विवेचन का प्रभाव देखने को मिलता है। सूर स्वयं तो लोक संस्कृति के कवि माने जाते है। इनके समय में अनेक धर्म साधनाएँ प्रचलित थी। एक तरफ शैवों के तन्त्राश्रित पाशुपत एवं कापालिक मत प्रचलित थे, तो दूसरी ओर जैनों की साधना पद्धति थी। उस समय पुरातन योगसाधना विधि का भी प्रचलन हुआ था। परवर्ती बौद्ध धर्म की महायान शाखा का मन्त्रयान शाखा का विकास हुआ था और इन वज्रयानियों ने हठयोग साधना पर अधिक बल दिया । जिस कारण गुह्य साधनाओं से युक्त सहजयान और सिद्ध मत समाज में प्रचलित होकर उसकी स्थापना की गई थी। इस मत में प्रचलित होकर उसकी स्थापना की गई थी। इस मत के साथ–साथ दूसरी ओर निरंजन सम्प्रदाय के मत भी समाज में रूढ़ हो गये थे।

सूरदास को कवियों का कवि माना गया है। इसका कारण ब्रजभाषा–काव्य की जो परम्परा निर्मित की वह बाद के लगभग चार सौ वर्षों तक चलती रही। सूर को समाज और साहित्य से जो ब्रजभाषा मिली थी उसे पहले से अधिक विकसित, परिष्कृत और अभिव्यंजक बनाकर उन्होंने बाद के कवियों को सौंपा। तभी वह चार सौ वर्षों तक काव्यभाषा बनी रही। यद्यपि सूर की कविता बाद के कवियों के लिए कठिन चुनौती साबित हुई। क्योंकि आचार्य शुक्ल के शब्दों में, ''वात्सल्य और शृंगार के क्षेत्र में इस महाकवि ने मानो औरों के लिए कुछ छोड़ा ही नहीं'' फिर भी परवर्ती काव्य परम्परा पर सूरदास का प्रभाव पड़ा है। वे तुलसी की तरह अपनी परम्परा के अन्तिम कवि नहीं हैं एक विशाल काव्य के परम्परा के प्रवर्तक कवि है। सूरदास ऐसे युग में अवतरित हुए थे जिसमें अनेक प्रकार के धार्मिक साधनाओं के बीच में युगचेतना भ्रमित थी और अनेक विकृत साधनाओं से युग–मानस विक्षुब्ध था। ऐसी दशा में सूरदास उस काल के लिए एक अवतार माने जाते हैं। जिन्होंने भगवान की रसमयी लीलाओं के गान द्वारा सगुण भक्ति की पीयूष धारा बहाई, जो निगुर्ण मूलक साधना से मुरझाए लोकमानस को संचित और सरस करने लगी।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

अरबस्तान से हिन्दुस्तान में आये सूफियों ने प्रेममार्ग से लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया था। इन कवियों के काव्य की प्रतिनिधि सन्त कबीर के काव्य में देखने को मिलती है।'' मध्यकाल की सम्पूर्ण धर्म साधना को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस काल के अध्ययन की सुविधा के लिए दो भागों में बाँटा है जैसे योगामूलक साधनाएँ और भक्तिमूलक साधनाएँ।'' अर्थात् सन्तों ने जो साधना अपनाई थी वह भक्तिमूलक थी। इन सन्तों को ज्ञानमूलक साधना लोक भाषाओं में रची गयी थी।

ब्रज प्रदेश में सूर के समकालीन कृष्ण भक्त सम्प्रदायों में हरिदासी सम्प्रदाय और राधावल्लभ सम्प्रदाय प्रमुख थे और सूरदास का उनसे निकट का संपर्क था। भक्ति आन्दोलन और भक्ति काव्य के माध्यम से लोक संस्कृति का उत्थान हुआ। भक्ति आन्दोलन पर पुराणों के चिन्तन का भी प्रभाव पड़ा। सूरदास भक्ति आन्दोलन में व्यक्त लोक संस्कृति के कवि हैं।

सूरदास के भक्तिकाव्य में ऊँचा दार्शनिक ज्ञान, अवतारवाद एवं कथातत्व, अनुभूत ज्ञान और युगचेतन का समन्वित रूप का सामंजस्य है। सूरदास जनमानस के हृदय को परखने की शक्ति रखने वाले हृदय पारखी कवि थे। इसे प्रस्फुटित करने के लिए उन्होंने लोकभाषा से अपनाया था और लोकभावनाओं को अभिव्यक्ति दी थी। संत सूरदास के विचार मानवता का संदेश देते हैं। साथ ही सूरदास साहित्य के गगन मण्डल में अमूल्य रत्न के रूप में विराजमान है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

सन्दर्भ–ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. शर्मा, सूर और उनका साहित्य, पृ0 2
2. प्रो0 दीनदयाल गुप्ता, अष्टछाप और बल्लभ सम्प्रदाय, पृ0 98
3. डॉ. शर्मा, सूर और उनका साहित्य, पृ0 21–24
4. सूरदास की वार्ता–सम्पादक प्रेम नारायण टण्डन, नन्दन प्रकाशन, 1968, पृ0 26
5. अष्टछाप, सं. डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा (सूरदास की वार्ता में चौथी वार्ता, रामनारायण लाला, प्रयाग 1129 ई0
6. सूरदास, प्रो0 शिवशंकर सारस्वत पृ0 30
7. सूर सोरभ, डॉ0 मुन्शीराम शर्मा, पृ0 123
8. वल्लभ सम्प्रदाय के 'अष्टछाप के कवि हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास (पंचम भाग), डॉ दीनदयाल गुप्ता, पृ0 55
9. मध्यकाल धर्म साधना, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ0 60